

मैं बसा हूं विविसि मधु बन साथियो ।

अब तुम्हारे हवाले विपिन साथियो ॥

यादि बढ़ती गई दिलि व्याकुल भई

फिर भी अपने बृज को न मैं चल सका

हंसे खेले जहां अब है रोना वहां

अपने प्यारों को धीरज न बंधवां सका

कुछ कहि न सका मैं वचन साथियों ॥१॥

ऐसा करना जतन मेरे प्यारे सखा

जैसे मैया हमारी न व्याकुल बने

वह ममता मई मिठी मैया मेरी

जिसने मेरे कारण सहे दुख घने

थामि लेना उसी का रुदन साथियो ॥२॥

मेरे प्यारे सखा बृज गोपी सबै

जिन ने सर्वस्व मुझ पर निछावर किये

लोक बाधाएं छिन्न भिन्न करदी सबै

मेरे पावन प्रेम का पथ है लिया

उनको कहना कि होगा मिलन साथियो ॥३॥

वृक्ष और लताएं रहे सब हरी
जल यमुना से भरकर उन्हें सींचना
पेट भर कर पियें दूध बछुड़े मेरे
धार गोओं से उनको नहीं खेंचना
सारे प्रसन्न रहे गो धन साथियो ॥४॥

शुक सारिका मेरा नाम रटने वाले
अब पूछेंगे रो रो कहां श्याम है
हम जायें वहां है प्यारा जहां
अब रहने का यहां न कोई काम है
उन्हें कहना मेरा आलिंगन साथियों ॥५॥

अब आवो सखा लगो छतियां मेरी
अपने कान्हा को तुम न भुलाना कभी
बाबा मैया को प्रणाम करना मेरा
संध्या समय गौओं संगि आओ जभी
करना गिरिराज को भी वन्दनु साथियों ॥६॥

क्या दिलि की कहूं जो व्यथा दिल भरी
पड़ा कर्तव्य का मुझ पर गुरु भार है
कोई अपना नहीं यहां दिखता मुझे
अब तो साथी मेरा एक करतार है
आकर मिलने का करना जतन साथियों ॥७॥

बृज कुंजनि की राणी श्रीराधा मेरी
बना जिनि प्रेम बल से मैं बलवान हूं
रट मुरली में राधा मधुर नाम मैं
भया सारे जगत का मैं भगवान हूं
उन्हें कैसे भुलाऊं पल छिन्न साथियों ॥८॥

देते देते सन्देशे कन्हैया भैया
चले आये वृन्दाबन प्यारे धाम में
आई दौड़ी गैया मिली प्यार मैया
सबकी आखें लगी सुन्दर श्याम में
भए गद्गद् जड़ ओ चेतन साथियों ॥९॥

हुआ आनन्द उत्सव वृन्दाविपिन में
जहां तहां हर्ष की हुबकार है

बैठें गोदी में मैया की प्यारे पिया
जो सारे बृज का आधार हैं
मिला मैगसि को प्रेम रतन साथियों
सदां जै जै श्रीराधाकिशन साथियों ॥१०॥